अनोखा, रूहानी रक्षा बन्धन

नाम : _____ तारीख : .....

सदा सुखदाता, वरदाता, भाग्यविधाता, परमपिता परमात्मा के समक्ष समर्पित प्रतिज्ञा-पत्र

सदा त्यागें

1. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार
2. पान, बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकु, शराब, जुआ
3. कुदृष्टि, कुवचन, कुकर्म, कुसंग, अश्लील सिनेमा
4. झूठ, चोरी, ठगी, बेईमानी, रिश्वतखोरी
5. ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा, चुगली, अपमान करना
6. बनावटी बातें, दु:ख देने के विचार और कर्म
7. माँस, मच्छी, अण्डा, प्याज, लहसून
8. पापाचार, दुराचार, भ्रष्टाचार, अत्याचार
9. बैर, विरोध, लड़ाई-झगड़ा

सदा अपनायें

1. प्रतिदिन प्रभु का ध्यान एवं मनन-चिंतन
2. मीठे वचन, मीठा व्यवहार, आदर सत्कार
3. सर्व के शुभचिन्तक, सर्व हितकारी
4. व्यर्थ बातें करने, सुनने से न्यारे
5. समय का कदर, अपनी ड्यूटी का कदर
6. रोज ज्ञान स्नान – आत्मा को पावन करने के लिये
7. मन, वचन, कर्म से सबके सुखदाता
8. गुण-दान, ज्ञान-दान, शान्ति-दान
9. बुराइयों से बचाना, प्रभु को राह पर चलाना

नाम : _____ फोन नं. : _____

आयु : _____ पूरा पता : _____

व्यवसाय : _____ _____

हस्ताक्षर :

सद्भावना एवं सामाजिक प्रेम का प्रतीक – रक्षाबन्धन

OM SHANTI

प्रभु प्रिय भय्या जी,

रक्षाबन्धन का त्योहार एक प्राचीन त्योहार है जो भारत वर्ष में बड़ी धूमधाम से बनाया जाता है। लेकिन अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण सभी त्योहारों का दिव्य एवं अलौकिक रूप समाप्त हो गया है केवल विकृत परम्परायें मात्र रह गईं हैं। लोग रक्षाबन्धन का भावात्मक पक्ष भूल गये हैं। वास्तव में इसका उद्देश्य बहन-भाई के बीच पवित्र सम्बन्ध है, उस पवित्र नाते के महत्त्व को जानकर सभी को पवित्र एवं निर्विकार बनने की प्रेरणा देता है। इसीलिये रक्षाबन्धन को पुण्य प्रदायक एवं विष तोड़क भी कहा जाता है। भाई के मस्तक पर ज्योति स्वरूप आत्मा का निवास स्थान है। इस दृष्टिकोण से देखा जाये तो रक्षाबन्धन ब्रह्मचर्य का पालन करने, सभी को आत्मिक-दृष्टि से देखने और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार आदि विकारों पर विजय प्राप्त करने एवं व्यसनों, बुराइयों के बंधनों से मुक्त होने का ईश्वरीय संदेश देता है।

ओ म् शा न्ति

अत: इन बुराइयों से छुड़ाने एवम् नैतिक आध्यात्मिक बल भरने, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे निम्नलिखित बुराइयों में से जो भी बुराई आपको बंधन में बाँधे हुए है, उससे रक्षा करने, मुक्त होने की युक्ति बताने आपको राखी बाँधने आयेंगी। ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे कोई स्थूल द्रव्य आदि न लेकर आपके जीवन में जो भी बुराइयाँ हैं उन्हें छोड़ने की प्रतिज्ञा आपसे करायेंगी।

काम	( )	बीड़ी, सिगरेट, जूआ	( )
क्रोध	( )	साम्प्रदायिकतावाद	( )
लोभ	( )	जातिवाद	( )
मोह	( )	शराब, भाँग, चरस, स्मैक, अफीम	( )
अहंकार	( )	ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, चिढ़चिढ़ापन	( )

उपरोक्त बुराइयों में से जो भी बुराई आप छोड़ना चाहते हैं, उस पर निशान लगायें। सहज राजयोग के अभ्यास एवम् ज्ञान शक्ति से बुराई अवश्य ही दूर हो जाती है और आपका जीवन तनाव मुक्त होकर सुख-शान्तिमय बन जायेगा।

OM SHANTI

ईश्वरीय सेवा में,

पवित्र रक्षा बंधन पर्व की कोटी-कोटी बधाइयाँ

परमपिता परमात्मा शिव के अति दुलारे, मानवता के सहारे, गुणों से शृंगारे, अति स्नेही

पावन रक्षा बंधन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार कीजिए। पवित्रता और स्नेह के प्रतीक रक्षा बंधन पर्व की बहुत-बहुत बधाइयाँ। यह एक अनोखा पवित्र बंधन है जो सर्व बंधनों से मुक्ति दिलाता है। इस पवित्र पर्व के दिन पवित्र राखी बंधवा कर हम भगवान से जुड़ सकते हैं और उसकी शीतल छाया में भी आ सकते हैं। यह पर्व हम सभी को प्रेरणा देता है कि जीवन को आध्यात्मिक मूल्यों से भरपूर कर, शान्ति और शुभभावना से रंग कर, व्यवहार में स्नेह, सहानुभूति, दिव्यता एवं मधुरता आदि दिव्य गुणों को धारण कर, संस्कार परिवर्तन द्वारा संसार परिवर्तन के श्रेष्ठ कार्य में सहयोगी बनें।

भावनाओं की डोर है राखी, पवित्रता की भोर है राखी।
कलाई पर जब यह सज जाती, भाग्य सितारा चमका देती।
आत्म-तिलक बन दृढ़ हो जाती, मधुर बोल की शिक्षा देती।
पवित्र वृत्ति की गाती आरती, जन्म-जन्म का भाग्य सँवारती।
सुखमय होती सारी धरती, शुद्ध भावों को दिल में भरती।
सदा निभाना प्रीत की रीति, यही सिखाती ईश्वरीय नीति।

ईश्वरीय सेवा में आपकी दैवी बहन

सद्भावना एवं सामाजिक प्रेम का प्रतीक – रक्षाबन्धन

OM SHANTI

प्रभु प्रिय भय्या जी,

रक्षाबन्धन का त्योहार एक प्राचीन त्योहार है जो भारत वर्ष में बड़ी धूमधाम से बनाया जाता है। लेकिन अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण सभी त्योहारों का दिव्य एवं अलौकिक रूप समाप्त हो गया है केवल विकृत परम्परायें मात्र रह गई हैं। लोग रक्षाबन्धन का भावात्मक पक्ष भूल गये हैं। वास्तव में इसका उद्देश्य बहन-भाई के बीच पवित्र सम्बन्ध है, उस पवित्र नाते के महत्त्व को जानकर सभी को पवित्र एवं निर्विकार बनने की प्रेरणा देता है। इसीलिये रक्षाबन्धन को पुण्य प्रदायक एवं विष तोड़क भी कहा जाता है। भाई के मस्तक पर ज्योति स्वरूप आत्मा का निवास स्थान है। इस दृष्टिकोण से देखा जाये तो रक्षाबन्धन ब्रह्मचर्य का पालन करने, सभी को आत्मिक-दृष्टि से देखने और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार आदि विकारों पर विजय प्राप्त करने एवं व्यसनों, बुराइयों के बंधनों से मुक्त होने का ईश्वरीय संदेश देता है।

अत: इन बुराइयों से छुड़ाने एवम् नैतिक आध्यात्मिक बल भरने, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे निम्नलिखित बुराइयों में से जो भी बुराई आपको बंधन में बाँधे हुए है, उससे रक्षा करने, मुक्त होने की युक्ति बताने आपको राखी बाँधने आयेंगी। ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे कोई स्थूल द्रव्य आदि न लेकर आपके जीवन में जो भी बुराइयाँ हैं उन्हें छोड़ने की प्रतिज्ञा आपसे करायेंगी।

काम	( )	**बीड़ी, सिगरेट, जूआ**	( )
क्रोध	( )	**साम्प्रदायिकतावाद**	( )
लोभ	( )	**जातिवाद**	( )
मोह	( )	**शराब, भाँग, चरस, स्मैक, अफीम**	( )
अहंकार	( )	**ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, चिढ़चिढ़ापन**	( )

उपरोक्त बुराइयों में से जो भी बुराई आप छोड़ना चाहते हैं, उस पर निशान लगायें। सहज राजयोग के अभ्यास एवम् ज्ञान शक्ति से बुराई अवश्य ही दूर हो जाती है और आपका जीवन तनाव मुक्त होकर सुख-शान्तिमय बन जायेगा।

OM SHANTI

ईश्वरीय सेवा में,

सद्भावना एवं सामाजिक प्रेम का प्रतीक – रक्षाबन्धन

प्रभु प्रिय भय्या जी,

रक्षाबन्धन का त्योहार एक प्राचीन त्योहार है जो भारत वर्ष में बड़ी धूमधाम से बनाया जाता है। लेकिन अशिक्षा एवं अज्ञान के कारण सभी त्योहारों का दिव्य एवं अलौकिक रूप समाप्त हो गया है केवल विकृत परम्परायें मात्र रह गई हैं। लोग रक्षाबन्धन का भावात्मक पक्ष भूल गये हैं। वास्तव में इसका उद्देश्य बहन-भाई के बीच पवित्र सम्बन्ध है, उस पवित्र नाते के महत्त्व को जानकर सभी को पवित्र एवं निर्विकार बनने की प्रेरणा देता है। इसीलिये रक्षाबन्धन को पुण्य प्रदायक एवं विष तोड़क भी कहा जाता है। भाई के मस्तक पर ज्योति स्वरूप आत्मा का निवास स्थान है। इस दृष्टिकोण से देखा जाये तो रक्षाबन्धन ब्रह्मचर्य का पालन करने, सभी को आत्मिक-दृष्टि से देखने और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार आदि विकारों पर विजय प्राप्त करने एवं व्यसनों, बुराइयों के बंधनों से मुक्त होने का ईश्वरीय संदेश देता है।

OM SHANTI

OM SHANTI

अत: इन बुराइयों से छुड़ाने एवम् नैतिक आध्यात्मिक बल भरने, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे निम्नलिखित बुराइयों में से जो भी बुराई आपको बंधन में बाँधे हुए है, उससे रक्षा करने, मुक्त होने की युक्ति बताने आपको राखी बाँधने आयेंगी। ब्रह्माकुमारी बहनें आपसे कोई स्थूल द्रव्य आदि न लेकर आपके जीवन में जो भी बुराइयाँ हैं उन्हें छोड़ने की प्रतिज्ञा आपसे करायेंगी।

काम	(	)	**बीड़ी, सिगरेट, जूआ**	(	)
क्रोध	(	)	**साम्प्रदायिकतावाद**	(	)
लोभ	(	)	**जातिवाद**	(	)
मोह	(	)	**शराब, भाँग, चरस, स्मैक, अफीम**	(	)
अहंकार	(	)	**ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य, चिढ़चिढ़ापन**	(	)

उपरोक्त बुराइयों में से जो भी बुराई आप छोड़ना चाहते हैं, उस पर निशान लगायें। सहज राजयोग के अभ्यास एवम् ज्ञान शक्ति से बुराई अवश्य ही दूर हो जाती है और आपका जीवन तनाव मुक्त होकर सुख-शान्तिमय बन जायेगा।

ईश्वरीय सेवा में,

रक्षाबंधन पर्वकीकोटि-कोटि बधाईयाँ

सर्व शक्तियों की किरणों से मनुष्यात्माओं को निरन्तर सशक्त करने वाले सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव की प्रिय संतान!_____

पावन रक्षाबंधन की हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये!

राखी के रूप में, कलाई के चारों ओर घेरा डालने वाले इस मुलायम धागे में असीम शक्ति समाई हुई है। क्योंकि संसार से आसुरी वृत्तियों का समूल नाश कर, दैवी वृत्तियों के प्रचार-प्रसार का यह ईश्वरीय शस्त्र है। भगवान कहते हैं – यदि तुम संसार की हर आत्मा को मेरी संतान समझ कर भाई-भाई की पावन दृष्टि-वृत्ति से निहारोगे तो संसार से काम, क्रोध, लोभ आदि महावैरियों का नामोनिशान मिट जायेगा। हर नर-नारी, प्रकृति, पशु-प्राणी सुरक्षित हो जायेंगे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान इस वर्ष को **'शुभभावना एवं शुभकामना वर्ष'** के रूप में मना रहा है। जैसे सूर्य की किरणें कीचड़ को समाप्त कर देती हैं, उसी प्रकार ईश्वरीय शक्तियाँ मनुष्यात्मा के विकारों और विकर्मों को समाप्त कर देती हैं।

आइये, मानवता तथा परमपिता दोनों के साथ हमारे सम्बन्ध को घनिष्ठ बनाने वाली इस राखी को **'स्व-परिवर्तन'** के दृढ़ संकल्प के साथ कलाई पर बाँधें, सद्भावना, स्नेह, सहयोग की सौगात सभी को दें। मधुर वचन की मिठाई खिलाते हुए इन्द्रियजीत स्थिति का तिलक मस्तक पर सुशोभित करें।

राखी भेजती हूँ आपके नाम से, रक्षा करने आए प्रभु परमधाम से।
कीमत न कीजिए इसकी दाम से, भरी है यह सुख-शान्ति के वरदान से।।

सेवाकेन्द्र :

ईश्वरीय सेवा में
आपकी दैवी बहन

Million times Good Wishes on Raksha Bandhan

Ever-Empowering the human souls with the rays of all powers, dear divine children of Almighty Supreme Soul Shiva!.....

Please accept the heartiest greetings on the auspicious occasion of Raksha Bandhan!

The sacred and soft thread of Rakhi contains in it the immense power. Since this is the Godly weapon that completely destroys the devilish tendencies in human beings and establishes in them the divine tendencies. God says: – If you, by realisng every soul of the world, as my progeny and look at him/her with the pure vision of brotherhood, then the greatest enemies of the man, i.e. lust, anger, greed, attachment and ego will be completely wiped out. And all the men, women, nature, animals, birds will feel safe, happy and secure. The Brahmakumaris Institution is celebrating this year as "The Year of Pure Feeling & Good Wishes." Godly powers eliminate the vices and evils from human souls.

Let's come and tie this Rakhi on the wrist that further strengthens our relationship with humanity and Supreme Soul both, with the firm determination of 'Self-Transformation' and give to everyone the gift of Goodwill, Love and Co-operation, sweeten the mouth of one-another with sweet words and apply on the forehead, the *tilak* of victory over sense-organs.

I send you this Rakhi specially addressed to you. God Shiva has come from Incorporeal World for the sake of entire universe!

This Rakhi is beyond evaluation in terms of monetary price; this is filled with the blessings of peace and happiness.

Centre:

In Godly service

Your divine sister

रक्षाबंधन पर्वकीकोटि-कोटि बधाईयाँ

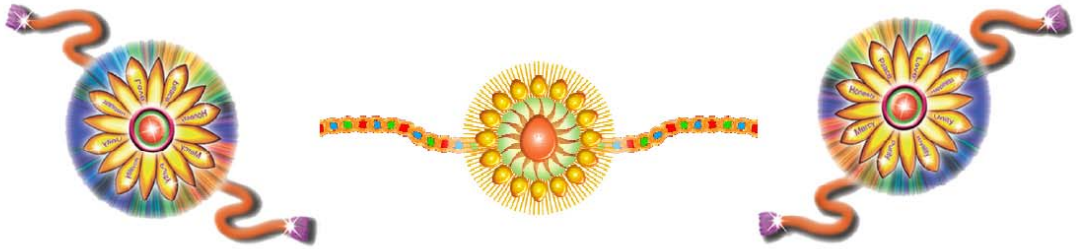

सर्व शक्तियों की किरणों से मनुष्यात्माओं को निरन्तर सशक्त करने वाले सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव की प्रिय संतान!

पावन रक्षाबंधन की हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये!

राखी के रूप में, कलाई के चारों ओर घेरा डालने वाले इस मुलायम धागे में असीम शक्ति समाई हुई है। क्योंकि संसार से आसुरी वृत्तियों का समूल नाश कर, दैवी वृत्तियों के प्रचार-प्रसार का यह ईश्वरीय शस्त्र है। भगवान कहते हैं – यदि तुम संसार की हर आत्मा को मेरी संतान समझ कर भाई-भाई की पावन दृष्टि-वृत्ति से निहारोगे तो संसार से काम, क्रोध, लोभ आदि महावैरियों का नामोनिशान मिट जायेगा। हर नर-नारी, प्रकृति, पशु-प्राणी सुरक्षित हो जायेंगे। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान इस वर्ष को **'शुभभावना, शुभकामना वर्ष'** के रूप में मना रहा है। जैसे सूर्य की किरणें कीचड़ को समाप्त कर देती हैं, उसी प्रकार ईश्वरीय शक्तियाँ मनुष्यात्मा के विकारों और विकर्मों को समाप्त कर देती हैं।

आइये, मानवता तथा परमपिता दोनों के साथ हमारे सम्बन्ध को घनिष्ठ बनाने वाली इस राखी को **'स्व-परिवर्तन'** के दृढ़ संकल्प के साथ कलाई पर बाँधें, सद्भावना, स्नेह, सहयोग की सौगात सभी को दें। मधुर वचन की मिठाई खिलाते हुए इन्द्रियजीत स्थिति का तिलक मस्तक पर सुशोभित करें।

राखी भेजती हूँ आपके नाम से, रक्षा करने आए प्रभु परमधाम से।
कीमत न कीजिए इसकी दाम से, भरी है यह सुख-शान्ति के वरदान से।।

ईश्वरीय सेवा में